अंतरा-शब्दशक्ति

लहरों में समंदर

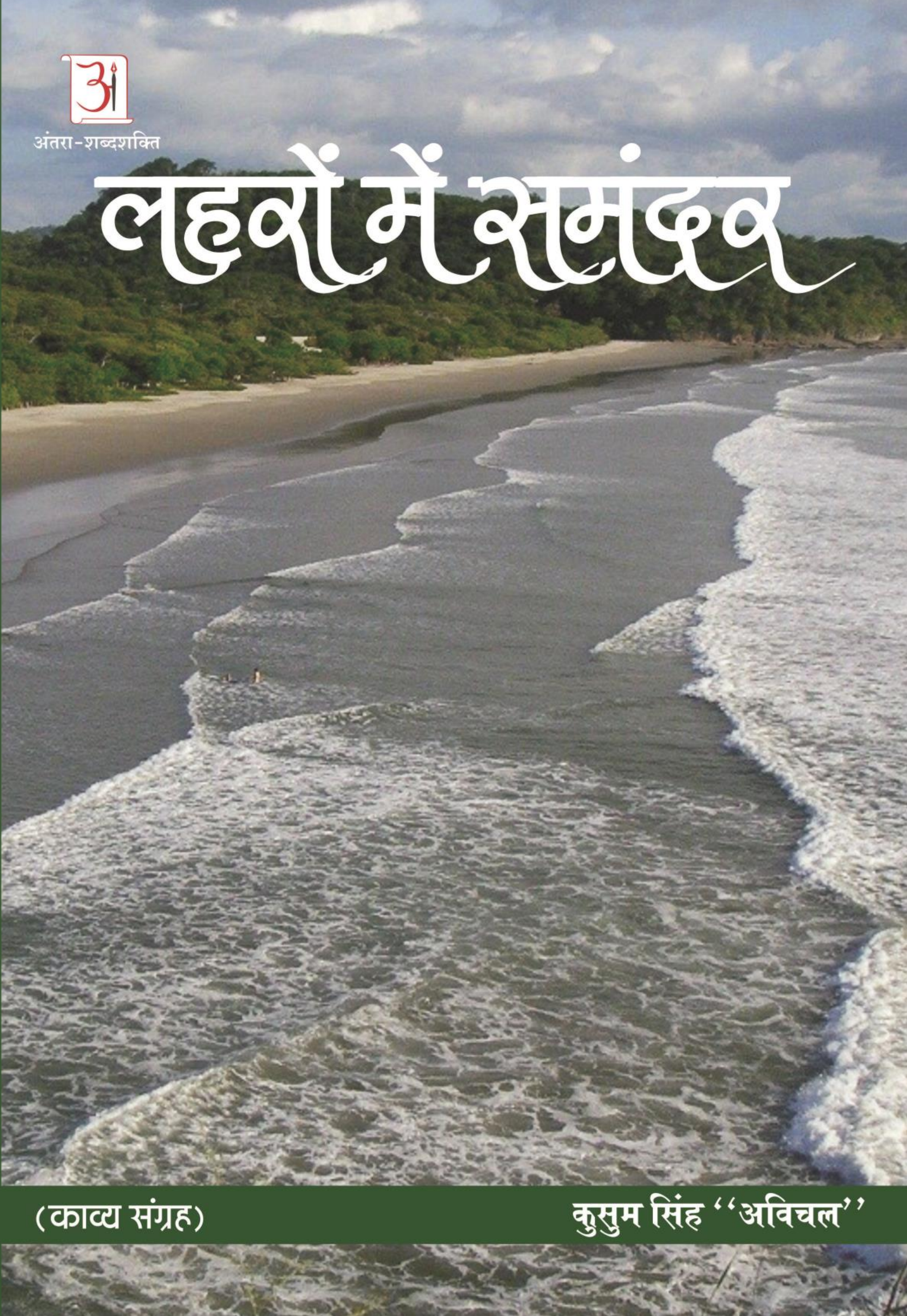

(काव्य संग्रह)

कुसुम सिंह ''अविचल''

लहरों में समंदर

(काव्य संग्रह)

डॉ.कुसुम सिंह 'अविचल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-99-5

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ -डॉ.कुसुम सिंह 'अविचल'

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Lahron me samandar By Dr. kusum singh 'Avichal'

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

हमारा मनोमस्तिष्क एक दिव्य पुंज होता है जो सतत प्रदीप्त रहता है। यह सूक्ष्म निर्विकार निराकार दृश्य तो नहीं होता किन्तु चरैवेति चरैवेति के सिद्धांत पर हर पल हर क्षण गतिमान रहता है, कल्पना लोक में विचारशील रहता है। चेतनावस्था में यह चिंतन मनन करते हुए अपने अभिन्न अंग स्थूल शरीर को क्रियान्वन के लिए प्रेरित करता है।

अर्धचेतनावस्था में अपने विचारों को, अपनी परिकल्पनाओं को न्यायसंगत रूप से समुचित ठहराने की अवस्था में होता है। तार्किक रूप से उचित अनुचित का संज्ञान अधिकतर आत्मा की अर्धचेतन अवस्था में ही होता है। एक तीसरी मनःस्थिति अचेतन की है। यह अवस्था अतिसक्रियता के पश्चात मनोमस्तिष्क के स्थिर व शांतचित्त विश्राम की होती है ताकि वह ऊर्जित होकर नवउर्जा उत्साह के साथ पुनः चेतनावस्था में आकर सक्रिय रूप से चिंतक व सर्जक की भूमिका में आ सके।

इसी मनःस्थिति से गुजरते हुए नए नए विचार बिंदु, कुछ समस्याएं, कुछ समाधान मस्तिष्क में यदाकदा उठते रहे उन्हें मैं तत्काल अपने शब्द संचयन से समेटती गयी और कुछ लयात्मकता को दृष्टिगत रखते हुए, शब्दों की श्रृंखला

बनाते हुए दो-दो, चार-चार पंक्तियों में क्रमबद्ध कर अभिव्यक्त करती गयी। ये सभी मुक्तक, दोहों के रूप में आपके समक्ष समसमीक्षार्थ प्रस्तुत हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे हृदयस्थ निःसरित भावों की व्यवस्थित अभिव्यक्ति को आप सभी का स्नेह मिलेगा, शुभकामनाएँ मिलेंगी।

शुभेच्छु

कुसुम सिंह "अविचल"

अनुक्रमणिका

1-माँ सरस्वती को नमन	7
2-मुक्त प्रवाह	8
3-क्षितिज	9
4-बेटी	9
5-पावस	9
6-भोर विभोर	10
7-भोर किरण	11
8-भोर मिलन	12
9-सर्द सुखद प्रभात	13
10-सांध्य बेला	14
11-भाव प्रवाह	15
12-भाव सरिता	16
13-भावों के रंग	17
14-राष्ट्रीय भाव	18
15-भाव प्रवाह	19
16-भाव लहर	20
17-दिल के भाव	21
18-कसक दिल की	22
19-मुक्त भाव	23
20-भाव समर्पण	24

21-श्रद्धा भाव 25

22-विविध भाव 26

23-दोहों के संग 27

24-दोहों के रंग 28

25-शुभकामनाएँ 29

26-शिक्षकों के नाम 30

27-विमुद्रिकारण की व्यथा (2016) 31

28-कोहिनूर 32

माँ सरस्वती को नमन

दिनकर की स्वर्ण रश्मियों सी,
सज संवर के निकली कौन हो तुम,
प्रफुल्लित कुसुम कलेवर सी,
माँ वाणी संग बेसुध मौन हो तुम।
माँ वीणा पाणी के चरणों मे,
रवि इन्द्र धनुष बन जाता जो,
तो ज्ञान दीप की छटा लिए,
ब्रह्माण्ड जोतिर्मय कर जाता वो।
यह भाव प्रवाह लिए मन सरिता,
मौन में भी बहता जाता वो,
मन उपवन में जो कुसुम खिले,
पतझड़ को भी पुष्पित कर जाता।
निज भाल बिंदु हिंदी बिंदी,
सजधज का कोई काम नहीं,
वीणा पाणी सह ज्ञान ध्यान
लिखना पढ़ना अविराम यहीं।
माँ वीणा पाणी कर परम कृपा,
कर ज्ञान दीप से ज्योतित नभ को,
द्योतित कर भाव प्रखर मन के,
उपादान अविस्मृत हो जग को।

मुक्त प्रवाह

इन्द्रासन हिल उठा दम्भ का जब,
गोवर्धन पर्वत कनिष्ठा पर उठाये,
नन्द लाल बने गोवर्धन धारी,
गोकुलवासी तब अति हर्षाये।

जला दशानन के पुतले,क्या कर लोगे आप,
दुःशासन फिरते स्वछंद,दिखे न घटते पाप,
बना ढेर दुष्कर्मों का यदि जला जाएं श्रीराम,
तो शायद कुछ शमित हो,कलयुग का संताप।

स्वच्छ जलवायु ही है स्वस्थ जीवन आधार,
पौधरोपण,वृक्ष संरक्षण से ही है सुंदर संसार,
भौतिकवादी सुविधाभोगी संस्कृति को छोड़े,
यह परिवर्तन ही होगा,उज्ज्वल भारत का सार।

क्षितिज

अवनी आकाश मिलते है,कुछ यूँ आभास होता है,
क्षितिज का नाम मिलता है,जब उनका साथ होता है,
नहीं तो धरती अम्बर में है,अरबों मील की दूरी,
गगन झुककर,धरा उठकर,मिलन एहसास होता है।

बेटी

बेटी है मृदुला रूप सलोना,
खुशियों से भरती घर का हर कोना,
सरल सहज मृदु सौम्य विनीता,
सबको खुश रखती याद न अपना रोना।

पावस

क्षिति सुन्दरम,छवि मोहनम,
वारिद सुखम, इति मेघदूतम,
सोंधी सुगंध,मृदा अति सुखम,
अति कर्ण प्रियमं,शाकुंतलम।
मधुरिम मृदुल,शुभ आगमन,
रिमझिम पयम,मन मोहकम,
झिल मिल तड़ित,रुनझुन पतंग,
हरीतिम प्रकृति अति शोभनम।

भोर विभोर

धवल प्रभात निशान्त ले आया, रश्मिरथी अरुणिमा संग आया,
अविरल नीर सरित का स्वर्णिम, परियों की दुनियाँ बन आया।
स्नेह प्रीति रत खग कुल चहके, श्रद्धा दीपों से देवालय महके,
पार्थ साधना,ध्रुव अटल विवेक, सृष्टि धरा नभ,जल तक दमके।

भोर की प्रभा लिए,बैठी हैं स्वर्ण रश्मियाँ,
पूर्णिमा की चांदनी को ढक रही है लालिमा,
कर रही विभोर आत्मसात,मन की भ्रांतियाँ,
सूर्य को नमन करें,पावस की चंद्र कांतियाँ।

शुचि नवल आशा सहेजे,आ गया स्वर्णिम सवेरा,
हो गयी रजनी तिरोहित,ले गयी संग में अंधेरा,
प्रस्फुटित किरणें अरुण,पल्लवित उपवन सुवास,
है तरंगित नदनीर निर्मल,खिल गया स्मित प्रभात।

भोर किरण

ओस की चादर का औरा, भोर आयी ठिठकती सी,
सूरज की सुखद किरणें,धरा पर न बिखरती सी,
अरे देखो उधर से क्या,पवन में कोई हलचल है,
बाग़ के पुष्प स्वप्निल से, नमीं धुंधली सिसकती सी।
अर्श से छिटक उजास,फर्श पर बिखर गयी,
रैन की अंधेरी पर्त, गर्त में उतर गयी,
हंस रही उषा मगन,ढंक दिया प्रत्युषा अंग,
खिल गयी नवल सुबह,प्रभा से सज संवर गयी।
नव प्रभा की किरण,अरुणिमा संग लिए,
मन प्रफुल्लित है,तन को पुलकित किये,
उषा की प्रस्फुटित,झिलमिल स्वर्ण रश्मियाँ,
सरित निर्मल नीर में,यूँ अवगाहन किये।
प्रातः के प्रबोध पर,प्रभा हुई प्रभासिनी,
मेघ के स्नेह से, मल्हार हुई रागिनी,
है भली छुवन सुखद,शीतल हुई तापिनी,
फूट रहे गीत मधुर,है मृदुल सुहासिनी।
चीर कर व्योम वक्ष,चमक उठी है दामिनी,
सब सुवर्ण स्वर्ण देख,सहमी रजत चांदनी,
हुई नवल धवल धरा, मृदा है नीर धारिणी,
प्रचण्ड ताप नम हुआ,सृष्टि हुई कामिनी।

भोर मिलन

रश्मि रथी की स्वर्णिम चादर,
शोणित सी लाल हुई सी है,
घनघोर निशा,तम घनीभूत,
अरुणिम लकीर एक खिंची सी है।
सुखद मनोहर दृश्य प्रभा,
लिए आदित्य स्वर्ण आभा,
दूर से चटकी किरणें,
तन छुवन सुख़न, मन को लुभा।
भोर को करें नमन,
हो गया निशि गमन
खिल गया हर कण औ तृण
दिनकर संग देखो मधुर मिलन।
इंदु नेपथ्य को चला,नव विहान आ गया,
अमिताभ क्षितिज से उठा,नव प्रभात आ गया,
रोम रोम खिल उठा,खग विहग चहक उठे,
कुसुम कली खिल गयी,उजास भू पे आ गया।
छन छन के आ रहा,प्रकाश विहान से,
अमावस की अंधियारी,रात के जहान से,
हर्षित उल्लास छलक रहा मन गागर से,
लें समेट स्वर्णिमा,छिटकी आसमान से।

सर्द सुखद प्रभात

सर्द भोर की कुंहास, ओस से ढकी प्रभात,
रश्मिरथी दुबक गया,अमिताभ न आस पास,
न विहग विहंगम नभ तले,न बाग़ में खिलन सुख़न,
नदी ठहर ठहर रही , ठिठुर रही सुबह स्वयं।
क्षितिज से छिटका,अरुण प्रकाश,
अवनि आकाश तक बिखरा,
विहग कलरव, सरित कल कल,
उपवन कुसुमित ,सुरभित धरा।
ज्योति का अद्भुत प्रसार,हो रहा प्रमुदित आभास,
है आह्लादित तन और मन,हो रहा सुखद प्रभाव,
है तिमिर मन को डराता,आशाएं धूमिल कर जाता,
हृदय सहमा सिमटता सा,फिर उजास की राह दिखाता
विलुप्त रजनी का तम घनघोर,
प्रभात रश्मियाँ छन रही चहुंओर,
हुई सुखद भोर,मन भाव विभोर,
नर्तन करता प्रमुदित मन मोर।

सांध्य वेला

दिवाकर नेपथ्य को चला,सुखद संध्या का शुभागमन,
पथ पथिक विश्राम में हैं, पावन सुरसरि का आचमन।
दिनमान का कोलाहल, अब शांत हो चला,
दिनभर का थका हारा, आराम को चला।
परिवार संग जीवन,सुखकर हर्षानुभूति है,
फिर हो दिवस का उत्सव,ऊर्जित सुखानुभूति है।
चंदा ने थामा दामन,अम्बर में जगमगाया,
तारों की झिलमिलाहट, तम चाँदनी नहाया।
खग विहग सो गए हैं,अलसा गए कुसुम हैं,
बेला और रातरानी,श्वेताभ संग सुगन्ध है।
खुशबू से चमन महका,हर श्वास मुस्कुराती,
खद्योत चमके तम में,चम चमक चमचमाती।
वृक्षों पे उल्लुओं का,बस शोर हो रहा है,
है रात की सियाही,तम घोर हो रहा है।
निद्रा का राज चलता,बस रजनी सनसनाती,
दस्तक न कोई द्वारे,बस नभ तारे टिमटिमाते।

भाव-प्रवाह

पीर के नीर भरे वारिद,अब जाके कहाँ पर बरसेंगे,
नैनन नेह अथाह भरा, अब जाके कहाँ पर छलकेंगे,
नदिया जो पीर उफान भरे,तटबंध तोड़ सैलाब बने,
अम्बर की दामिनी और बादल,पीड़ा को गरज के कह देंगे।
खुदा ने ग़र ज़मी बख्शी,फलक से कर दिया तन्हा,
नज़र में शबनमी आंसूं,ज़िन्दगी का हर लम्हा तन्हा,
कहें भी क्या,करें भी क्या,कोई शिकवा शिकायत भी,
न लब खुलते न कह पाते,हर्फ़ों का भी फन तन्हा।
इस दिल का दर्द बहा दें कुछ,आंखों के खारे पानी में,
पाषाण बना जो,पिघल जाये, बर्फीली उष्ण रवानी में,
शब्दों से छन निकले गुबार,दिल दर्द से जब बोझिल हो,
नम आंखे हों,मन भारी हो,वेदना व्यथा अधिकारी हो।
अनुभूतियां अभिव्यक्त न हों,भावनाएं क्या करें,
संवेदनाएं शुष्क हो जब ,तब वेदनाएं क्या करें।
कश्ती चलाने वाले ने ,जब हार के दी पतवार हमें,
लहर लहर तूफान मिले,झंझावातों की धार हमें।
क्लिष्ट राहों का यह जीवन,हर मोड़ इसका दुष्कर,
किसी मोड़ पर मुसाफिर,घबरा के रुक न जाना,
नूतन हैं नित की अड़चन,अपनाना हर परिवर्तन,
संग साथ न भी हो तो,एकाकी बढ़ते जाना।

भाव सरिता

मन के गहरे खारे सागर में,
भावों की निर्मल सरिता बहती है,
पीड़ा का भाव समेटे जो,
आँचल से ढक कर कहती है।
भावों को कहते शब्द शब्द,
वाक्यों में दर्द पिरो देंगे,
इनका एक एक अक्षर एक दिन,
मेरे हस्ताक्षर बन नम होंगे।
नैनन में पीर का नीर भरा,
गहरा ठहरा सा बांध बंधा,
थोड़ी सी भी हलचल हो तो,
पोरों से ढल,सैलाब बहा।
आज अगर तुम संग में होते,
कितना सुखमय जीवन होता,
एकाकी यह सफर न खलता,
नैनों में खारा जल न होता।
मौन दे रहा प्रेम निमंत्रण,
कैसे मैं स्वीकार करूँ,
कई प्रश्न उठ रहे अंतस में,
कैसे मैं अंगीकार करूं।

राष्ट्रीय भाव

वसुंधरा पर भारतवर्ष की विजय ध्वजा लहरायेगी,
आन बान और शान हिन्द की गौरवगाथा दोहरायेगी,
अब तक खण्डित हुई धरा,और नहीं अब और नहीं,
उद्घोष अमर जयहिंद सदा,वाणी वंदेमातरम गाएगी।
लहराया परचम राष्ट्रवाद का,अम्बर तक पँहुचा निनाद,
बड़े दिनों के बाद है देखा,अपना भारत अपनों के पास,
जूझता है नित दुश्मन से,जो करता रहता धोखे से वार,
आज उसी भारत का अपने,उच्च भाल देता गर्वोल्लास
जातिवाद की आग को हवा दे देके सुलगाना ठीक नहीं
हिन्दू को पथ से भ्रष्ट बना,आपस में लड़ाना ठीक नहीं,
विविध धर्म संस्कृति का देश,सब एक पेड़ की शाखाएं,
बुद्धिज्ञान के चक्षु खोलकर,सम समाज की नीति सही।
मैं हिन्द देश की नारी हूँ, है रक्त धमनियों में हिन्दू,
रग रग में हिन्दू संस्कृति है,भारत का भला हिन्द बिंदू,
सौगंध हिन्द की माटी की,यह जब भी पुकारेगी हमको,
रख प्राण हथेली पर अपनी,लांघेंगे चिनाब झेलम सिंधु
सीने में देश के दुश्मन को दहकती ज्वाल रखती हूँ,
अपनी मुट्ठी में बंद सदा,तपते सूर्य सी अंगार रखती हूं,
उठाया सिर शत्रु ने अगर,यह मुट्ठी खुल ही जाएगी,
राख हो जाएगी दुश्मन की हद,सुलगती आग रखती हूँ

भाव प्रवाह

मैं दिल में अपने देश का सम्मान रखती हूँ,
राष्ट्र को समर्पित गौरव गान रखती हूँ,
आंच न आ जाये कहीं,राष्ट्र ध्वज की आन पर,
शीश पर हरदम,कफन को तान रखती हूँ।
हो रहा शत्रु अब अति उदण्ड, देना है अब कठिन दण्ड,
सरहद से उठता घोर शोर,करना प्रहार होकर प्रचण्ड,
नापाक शत्रु का कुटिल कृत्य,कश्मीर हमारा है घायल,
रह रह कर करता छद्म वार, लगता कुंठा से है पागल।
आस्तीन में छिपे पनंगों को जो यूँ मय न पिलाया होता
तो दंश इस दिल में उनके यूँ डसने का न आया होता,
अपराध हमारा इतना बस की सबको ही अपना माना,
भर भर मिली सजाएं यूँ,कुछ सोचा या विचारा तो होता
जीवन की युवा ऊर्जा का,उत्कर्ष शीर्षस्थ आरोही हो,
बाधा कोई भी राह न रोके,न दिशा कभी अवरोही हो,
उन्नति की राहों में अक्सर,अवरोध खड़े हो जाते हैं,
दृढ़ आत्मशक्तिबल शक्तिमान,हताश सभी गतिरोधी हो
हमारे देश का गौरव , हमें सम्मान देता है,
युवा भारत,युवा ताकत,हमें पहचान देता है,
बजे फिर विश्व में डंका, विश्व गुरु यह कहलाये,
हमारे देश का यौवन, विवेकानन्द हो जाये।

भाव लहर

आरक्षण की बैसाखी तज,निज ज्ञान का मान बढ़ाओ,
विष धारी विषपायी नाग को ,दुग्ध न और पिलाओ,
योग्यता कभी आरक्षण की मोहताज नहीं होती,
मत खेलो मेधा के संग,प्रतिभा को सम्मान दिलाओ।
गंगा का सानिध्य मिला,फिर भी हम प्यासे के प्यासे,
माँ गंगा का मान मिला,पर किया प्रदूषित आते जाते,
निर्मल जलधार लिए सुरसरि,उतरी शिखर हिमालय से,
दुरुपयोग गंगाजल का अति,मैली हो गयी आते आते।
आंखों के आँसू सूख गए,रत्नाकर की क्या बात करूं,
अरमानों की अर्थी निकली,तूफानों की क्या बात करूं,
अम्बर में बादल, सागर में तूफान यूँ ही आते रहते हैं,
कुछ खोने को जब पास न हो,संग्रह की क्या बात करूं
बेटी से घर आंगन महके, बेटी होती घर की शान,
जिस घर में बेटी न चहके,वो घर लगता है सुनसान,
बेटी होती पिता की आन,माँ के पूरे करती अरमान,
आँखों में यदि आँसू छलके,भर देती झट से मुस्कान।
जो कोख में मारे बेटी को,इंसान नहीं शैतान है वो,
उन्हें चौराहे पर सजा मिले,घृणा के ही लायक है वो,
हत्या के कानून की धारा,फांसी की सजा मिले उनको,
लिंग परीक्षण के यंत्र बन्द हों,यही नीति का विधान हो।

दिल के भाव

एक अजीब सा खालीपन,सूनेपन का एहसास,
रह रह कर विकल करे दिल को,हो जाती सांसे उदास,
यह हठी अकेलापन,कभी भी दूर नहीं जाता,
नम आंखों से,कुछ बातों से,यह छलक छलक जाता।
यह दिल तो है बेज़ार मगर,न ज़ार ज़ार यह रोता है,
कहता न कभी अपनी पीड़ा,सिसकी भर रह जाता है,
कुछ तो अपनों ने दिए दर्द,कुछ गैरों ने बेहाल किया,
नैनों में नमी,सीने में धुंआ,फिर भी हरदम मुस्काता है।
मैनें आंखों से जब पूछा, है कहाँ आंसुओं का दरिया,
आंखे बोली वो हैं तलाश में,जिसने उनको दर्द दिया,
मिल जाये कहीं राहों में यदि,वो दर्दनाक कारण मुझको
बरसेंगे बादल वहीं झमाझम,नयनों से निर्झर झरना।
थाम लो बढ करके दामन,कदम ये मेरे डगमगा रहे हैं,
अकेले राहों पे चलके थककर,पैर मेरे लड़खड़ा रहे हैं,
कहाँ जाके हमराह ढूँढू ,जो राह चलते कहीं खो गया है
नभ के तारों ने ये बताया,उन्हीं के संग वो मुस्कुरा रहे हैं
आँखों से दर्द का दरिया,उतारना भी जरूरी है,
जमी हो बर्फ सीने में,पिघलना भी जरूरी है,
मंज़िल तक पंहुचने को,भटकना भी जरूरी है,
समय के साथ चलने को,संवारना भी जरूरी है।

कसक दिल की

न होता दर्द सीने में , तो आंखे नम नहीं होती,
कलम चलती न आहों पर,कसक ये कम नहीं होती,
ढलकते न जो ये आंसू ,कभी गमगीन आंखों से,
तो उदधि खारा नहीं होता,सरित लहरें नहीं होती।
जुबां को खोलकर अपने हृदय की बात कह डालो,
खोल दो गांठों के बंधन हृदय विस्तार कर डालो,
न सोचो कुछ कि क्या होगा क्यों होगा कहां होगा,
दिलों में जम गयी जो बर्फ,नमी देके बहा डालो।
दिल में बैठी गर्त जो,जम गयी तो क्या करें,
हृदय में कुछ ग्रंथियां बंध गयी तो क्या करें,
हार कर बैठे दिलों से चिन्तनों के काफ़िले,
संभावना की चौखटों पर,चेतनाएं क्या करें।
खुले आकाश का पंछी,पंख परवाज़ मत बांधों,
नदी कहती तटबंधों से कि मेरी धार मत बांधों,
भटकती हूँ कल्पनाओं में,सपनों में ही खो जाऊं,
उलझता सा है मन मेरा क्या तारों में समा जाऊं।

मुक्त भाव

सफर किसी का सफर ही रहता,
मुकाम बस एक पड़ाव रहता,
नसीब में है किसी के मंज़िल,
किसी को राहें ही मिल रही है।
बनाया है जो जीवन लक्ष्य,वो पाना अभी बाकी है,
अभी तो कदम रखे हैं ज़मी पर,आसमान बाकी है,
अभी तो बस लोगों ने उनका नाम ही जाना है,
उस नाम की हर दिल में पहचान अभी बाकी है ।
माँ नाम के पर्यायवाची,माता अम्मा मम्मा मॉम,
अम्मा माता जी संबोधन,तो भूतकाल की बात,
वर्तमान का नया जमाना,बढ़ चढ़ बातें करें लपेट,
भविष्य काल के गर्भ में,होंगें शेष और भी नाम।
अपनी माँ, सौतेली माँ तक ही सीमित थे संबंध,
अब तो कोख किराये की भी,नहीं कोई प्रतिबंध,
टेस्ट ट्यूब बेबी भी मिलते,बिना किसी व्यवधान,
गोद भी ले सकते हैं बच्चे, इसका भी सुलभ प्रबंध।
फिर माता के संबोधन का कैसे करे निदान,
शब्द सभी पर्यायवाची,अर्थ सभी के समान,
माता जी को माँ कह लो,अम्मा मम्मा या मॉम,
संबंध है ममता का अभिन्न,शाश्वत और सरनाम।

भाव समर्पण

मैं तुमको संबोधन क्या दूँ,तुम तो मृदुल विनीता हो,
शब्दों में जो सिमट सके न,वह उदार हृदयी पुनीता हो,
है विशाल व्यक्तित्व तुम्हारा,कलयुग की तुम सीता हो,
अनुशासित कर्मठ ज्ञान की देवी,कर्मक्षेत्र की गीता हो।
जीवटता की तुम मूरत हो,है जीवंत व्यक्तित्व तुम्हारा,
मधुर सरल,सहज तुम,छल छद्म हीन निश्छल स्वभाव
मृदु वाणी चुप रहती है बेबाक मौन सब कुछ कहता है,
रहती है करुणा दिल में,हर प्राणी के प्रति समान भाव।
सत्य वचन सत्कर्म से राहें रहीं सदा ही क्लिष्ट,
किन्तु प्रखर व्यक्तित्व से करती सभी अभीष्ट,
हिम्मत कभी न हारती,लाख मिले अवरोध,
शांत भाव भंगिमा से,करती रहती प्रतिरोध।
भावना संवेदना संग,करती प्रभावशाली अभिव्यक्ति,
न होता कोई कभी नाराज,अंतर्मन छू लेती मृदु वाणी,
हर बात सरलता से कह दी,हर भाव ईर्ष्या द्वेष रहित,
शब्दों के तीक्ष्ण प्रहार भी हों,कमान सहजता से तानी।
मधु से मधुर मधूलिका,नीलाम्बर तक पंहुची नीलिमा,
लिख लेती है मानोभाव मृदुला,चलती नित ही तूलिका,
शुभ प्रभात शुभ सांध्य कामना,दिनचर्या के अंग बने,
हो अरुणिम प्रकाश का प्रातः,संध्या की हो हरीतिमा।

श्रद्धा भाव

वे सृजन भूमि के कर्म शील,जीवटता की प्रतिमूरत थे,
आयु अवस्था पर भारी,दृढ़ता की प्रतिबिम्बित सूरत थे,
आज हमारे मध्य से वो,बिना कहे कुछ चले गए,
नतमस्तक श्रद्धानवत,भावांजलि उन्हें समर्पित करते।
साहित्य समर्पित हस्ताक्षर,हम सबके प्रबल प्रणेता थे,
लेखन की हर विधा के ज्ञाता,सतत सजग अध्येता थे,
धन्य हुए कविकलमकार,उनका सानिध्य मिला सबको,
सहज सौम्य व्यक्तित्व के स्वामी,कृतित्व से विजेता थे।
सदियां भी भूल न पाएंगी,उनका साहित्यिक योगदान,
वे आज हमारे मध्य नहीं,विधि का है यह निज विधान,
साहित्य के साधक,रचनाधर्मी,निर्माता,निर्देशक नहीं रहे
व्यक्तित्व सदा उनका प्रणम्य,कृतित्व सदैव कीर्तिमान।
सृजनाम्बर का ध्रुवतारा,युगयुग तक ज्योतिमान होगा
लेखन के प्रबल पुरोधा का,तप त्याग कीर्तिमान होगा,
साहित्य जगत के सजग प्रहरी,सशक्त लेखनी वाहक,
कविकुल संरक्षक मौन,पुण्यात्मा का अमर गान होगा।

विविध भाव

रेल गाड़ी चले कि बैल गाड़ी चले,
धुंध कोहरे की मारी सवारी चले,
सर्द ठिठुरन से ठिठका है सारा जहान,
रेल पथ,वायु पथ,सड़के सूनी चलें।
नशे की लत जो लगती है,
घर परिवार बर्बाद होते हैं,
न जाने यह नशा क्या है,
जो पागल लोग रहते हैं।
कविता कवि का भाव है,
कविता कवि की चाह,
कविता कवि की अर्चना,
कविता कवि की आह।
भावों के अथाह समन्दर को,
लहरों की तरंगों ने साधा,
स्वरों की तरंग तरंगित कर,
शब्दों को सुरों में फिर बांधा।
मंथन कर सागर का अपार,
रत्नों को समेटा और सहेजा,
फिर चुन चुनकर हर एक रत्न,
कला कौशल से हर रत्न तराशा।

दोहों के संग

भ्रष्टाचार के गर्त में,डूब रहा है देश,
आतंकी सर पर चढ़ा,कैसा यह परिवेश।

समझ-बूझ करते रहे, हो गये सभी निढाल,
दीमक बन दुश्मन घुसा, करे खोखली खाल।

राजनीति के राजा भोगी,चले दुरंगी चाल,
जनता पर हर दांव है,ओढ़ भेड़िया खाल।

दूध पिलाया था जिन्हें,बन गए काले नाग,
जहर उगलते रात दिन,कर दी मेहनत बर्बाद।

अब चालें ऐसी चलो,शतरंजी जाएं हार,
शकुनि लौटे गांधार, अभिमन्यु तोड़े द्वार।

आ जाओ सुदर्शन चक्रधर,कौरव है भारी आज,
कर संहार सब दुष्टों का,फिर ला दो राज सुराज।

अपने देश का फिर से,हो सोन चिरैय्या नाम,
विश्व गुरु कहलाये फिर,ये"अविचल"अविराम।

नारी घर का रस अलंकार है,नारी से घर द्वार,
नम्र सुशीला कर्मठ है,जीवन को देती आधार।

जीवन नैय्या हो तटबंध,या कि हो मंझधार,
हिम्मत अदम्य धारे नारी, कर देती बेड़ा पार।

दोहों के रंग

एक दिशा सब खग चले,बना वृन्द अविराम,
रैन बसेरा ढूंढते , जहां मिले विश्राम।

ढलता देखा भानु को,चले नीड़ की ओर,
चूं चूं करते उड़ चले, छोड़ बाग़ का छोर।

सूरज चमका क्षितिज से,ढका रैन अंधियार,
अब काहे स्वनिल नयन,जब चेतन सब संसार।

लता कहे है पुष्प से,क्यों इतना इतराय,
टूट डाल से जो गया,मिट्टी में मिल जाय।

भरे पेट आकंठ तक,मिले पाक पकवान,
भूख से व्याकुल पेट को,मिले नहीं जलपान।

अंग्रेज़ी से प्रेम है,क्यों हिंदी से परहेज,
फंसा जाल अंग्रेज़ियत,चले गए अंग्रेज़।

बबुआ पापुआ प्रेम में,यू पी बंटाधार,
वोट करें सब समझकर,बने सही सरकार।

देख के पानी आंख का,दिल पर लगती चोट,
मूक पशु जब देखता,धरा गंडासा ओट।

पीत वर्ण गेंदा खिला,खिला है लाल गुलाब,
पूरे उपवन पर भारी है,कमल खिला तालाब।

शुभकामनाएँ युवाओं को

जन्मदिवस की शुभ वेला में शुभ का ही हो अभिनंदन,
जीवन सदैव फूलों सा महके,हर दिल में हो शुभचिंतन,
चरम शिखर उत्थान के छू लो,यशोगान हो दसों दिशा,
जीवन के सोपान चढ़ो नित,शुभाशीर्वाद है संग सदा।

मातपिता की सुखमय छाया,सदा रहे आशीष तुम्हारे,
गुरु की कृपा सदा बरसे,हो शुचिता हृदयस्थ तुम्हारे,
शिक्षा संस्कृति आभूषण हों,शुभवाणी श्रृंगार तुम्हारा,
आरोही उत्कर्ष सदा,हो कीर्तिमान व्यक्तित्व तुम्हारा।

आसमान को उड़कर छू लो,राष्ट्र करे गौरव तुम पर,
मातृ भूमि का मान बढ़ाओ,जाति धर्म से ऊपर उठकर,
राष्ट्रध्वजा तुम फहरा दो,हिमगिरि के उत्तुंग शिखर तक,
कीर्ति पताका नभ को चीरे,नाम करो अपना स्वर्णक्षार।

शुभकामनाएँ वरिष्ठों को

आपको उपहार क्या दें,आप खुद उपहार हमारे,
आपको सम्मान क्या दें,आप खुद सम्मान हमारे।

कृति की चर्चा तो करें,व्यक्तित्व को भी हम विचारें,
नम्रता जीवंतता शिष्ट,सौम्यता विद्वता निहारें।

जन्म की हीरक जयंती,शुभम हो सब साधनाएं,
स्वस्थ जीवन सुखद हो,करते यही शुभकामनाएँ,

आपका व्यक्तित्व ऊर्जित,नमन करते आपको हम,
आपका है कृतित्व अनुपम,प्रणाम करते आपको हम।

शिक्षकों के नाम

अवतरण धरा पर हो गया,मातपिता का मान,
पर शिक्षक से ही मिले, दिशा दशा और ज्ञान।
शिक्षा रहित समाज का होता विकृत रूप,
बुद्धि ज्ञान बिन शून्यता,होती सुकृति कुरूप।
शिक्षक बिन जीवन होता,ज्यों नाविक बिन पतवार,
शिक्षा की रविकर आभा से,ज्योतिर्मय होता संसार।
शिक्षक शिक्षार्थी जीवन की,आधार शिला सा होता है,
उज्ज्वल भविष्य,उन्नत शिखरों का वो निर्देशक होता है
माता पिता से बढ़कर भी,शिक्षक दायित्व निभाता है,
यदि सही दिशा निर्दिष्ट न हो,जीवन व्यर्थ हो जाता है
शिक्षक के सम्मान में,नतमस्तक होते हम बार बार,
श्री चरणों में नत नमन वंदन है,अभिनंदन बारम्बार।

विमुद्रीकरण की व्यथा(2016)

नोटों ने अब तो दिल को लुभाना छोड़ दिया,
बंदी का सुन ऐलान ,इतराना छोड़ दिया।

हैं आंखों में आंसू,पनसौव्वा के गांधी,
रो रो कर बदहाल हजारी की आंधी।

कहीं आत्मदाह करते कहीं दफन है कब्रों में,
कहीं छिपे पलंग के भीतर,सिसके पल पल में।

जलकर मर मिटने का,तराना छोड़ दिया,
घुट घुट कर जीने का बहाना छोड़ दिया।

जो अकड़ अकड़ चलते,अब झुके हुए चलते,
पूछे न कोई बिन मोल,दर दर भटकते फिरते।

कालिख से पुते चेहरे ,काजल की कोठरी में,
किस तरह से कायाकल्प करें,नहीं जानते ये।

कोहिनूर

कहने को तो कहते हैं,यह कैसा सुरूर है,
यह कुछ नहीं बस अपना हीरा कोहिनूर है।

नज़रों में खास आस और चेहरे पे नूर है,
यह कुछ नहीं बस अपना हीरा कोहिनूर है।

कुछ खास बात तो हर दिल में ज़रूर है,
यह कुछ नहीं बस अपना हीरा कोहिनूर है।

हीरे तो बहुत है कि जो सजते हैं संवरते,
पर अपना बेशकीमती बस कोहिनूर है।

लाना इसे वापस हमें,फिरंगी के देश से,
दिल में बसा यह लाजवाब कोहिनूर है।

ये हम सबकी शान है भारत की आन है,
भारत की अमानत ये हम सबकी जान है।

कुछ भी हमें करना पड़े,हम करके रहेंगे,
है अनमोल धरोहर हम अपनी लेके रहेंगे।

देश के हर बंदे का यह ख्वाब हूर है,
यह नहीं बस अपना हीरा कोहिनूर है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - कुसुम सिंह ''अविचल''

जन्म - 29.04.1957

पिता - स्व. सुंदर सिंह चन्देल

पता - 1145 (प्लाट स्कीम), रतनलाल नगर,
कानपुर - 208022 (उ.प्र.)

शिक्षा - परास्नातक (अर्थशास्त्र), क्राइस्ट चर्च कॉलेज कानपुर

सम्प्रति - पंजाब नेशन बैंक, कानपुर (अधिकारी पद से गतवर्ष सेवानिवृत)

वर्तमान - साहित्यिक, सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता

कृतित्व - प्रथम कविता संग्रह 'अनुभूति से अभिव्यक्ति तक' प्रकाशित 2016।
द्वितीय काव्य कृति 'गागर से छलकता सागर' प्रकाशित 2018।

विधा - कविता, गीत, दोहा, छंद मुक्त लेखन ।

सम्मान - पंजाब नेशनल बैंक, कानुपर मंडल से 'राजभाषा सम्मान 2015'
पं.ने.बै., प्र. कार्या. नई दिल्ली द्वारा 'लाला लाजपत राय' हिन्दी साहित सम्मान 2015
आगमन संस्था दिल्ली द्वारा 'आगमन गौरव सम्मान' 2017
अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर 'प्राईड ऑफ वोमेन' 2018 सम्मान

गतिविधियां - नगर व बाहर हाने वाली वैचारिक गोष्ठियों, काव्य गोष्ठियों में सतत् सहभागिता

प्रकाशन - पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कविताएं, गीतों का प्रकाशन।

उत्तरदायित्व - अध्यक्ष - आगमन साहित्यिक समूह, कानपुर
अध्यक्ष - मधुरिमा साहित्यिक संस्था, कानपुर
संयोजक - भारत विकास परिषद, पांचजन्य शाखा, महिला प्रकोष्ठ, कानपुर

मो. नं. - 09453815403, 09335723876

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-99-5

मूल्य- 55/-